शोध प्रबंध का प्रारूप

ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएँ एवं प्रभाव
"सामोद (जयपुर) के विशेष संदर्भ में"

पर्यटन प्रबन्धन में पी-एच. डी. की उपाधि

हेतु प्रस्तुत

द्वारा

उमाकान्त इन्दौलिया

निर्देशक

डॉ. सुनील काबिया
एसोसिएट प्रोफेसर
पर्यटन एवं होटल प्रबंधन संस्थान
बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय
झाँसी

शोध उपाधि समिति

देव संस्कृति विश्वविद्यालय
शांतिकुंज, हरिद्वार

को प्रस्तुत

परिचय (Introduction)

भारत देश ग्रामीण प्रधान अर्थव्यवस्था वाला देश है। भारत की 74 प्रतिशत जनसंख्या 7 लाख गाँवों में बसती है तथा भारतीय गाँवों में ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनाएँ हैं। भारत में आर्थिक क्रांति आयेगी तो गाँवों को केन्द्रित कर बनाई गई योजनाओं द्वारा ही आयेगी। ग्रामोद्योग, कृषिउद्योग, गाँवों में पर्यटन हमारी अर्थशक्ति का आधार बनेंगे तो गाँव स्वावलम्बी व आकर्षक बनेंगे इससे ग्रामीण संस्कृति जो कि ऋषि जीवनशैली व प्रकृति की पोषक है, पुर्नस्थापित व विकसित होगी। देश में बढ़ती गरीबी, बेरोजगारी, निरक्षरता, क्षेत्रीय विभिन्नता, वनोन्मूलन द्वारा पर्यावरण अधोगति, शहरीकरण आदि की समस्या को दूर करने के लिए गाँवों में पर्यटन को विकसित किया जाना चाहिए।

भारत में अनेक क्षेत्रों में जिसमें विशेषकर राजस्थान ग्रामीण पर्यटन में विशेष रूचि का स्थान रखता है। यहाँ के ग्रामीण आंचल में अनेक ऐतिहासिक धरोहर किले व हवेली, सांस्कृतिक सांस्कृतिक सम्पन्नता में विविध जनजातियाँ रंग–बिरंगे परिधानों की विविधता, लोकसंगीत व नृत्य अनोखी संस्कृति व आनन्दमय प्राकृतिक सौन्दर्यता, विभिन्न जीव उद्यान, स्वर्णिम बालू, रेत के स्तूपों के कारण देशी–विदेशी पर्यटकों के स्वाभाविक रूप से आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। ये सभी कारण राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन के विकसित होने के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।[1] राजस्थान में सामोद गाँव, (जयपुर) भी ग्रामीण पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। यहाँ सामोद पैलेस, सामोद बाग व विभिन्न कलाकृति व राजस्थानी संस्कृति, पहाड़ों से घिरा, प्रकृति का मनोहर आनन्द आदि सभी का समावेश है।[2]

Rural : यह शब्द दो विभिन्न लक्षणों से प्रकट होता है; पहला ग्रामीण लोग कृषि क्षेत्र में रहते हैं व वहाँ 5000–10000 तक मकान हो, दूसरा वहाँ के अधिकांश लोग मुख्यतः कृषि पर आश्रित होकर अपना जीवन बिताते हों व अपना अधिक समय कृषि में व्यय करते हैं। इन ग्रामीण क्षेत्रों में शान्त व आनन्ददायक वातावरण, अप्रदूषित वायु, प्राकृतिक–सुन्दरता व विशेष संस्कृति होती है जो विदेशी व शहरी लागों को बहुत पसन्द होता है व इससे सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार हर ग्रामीण क्षेत्र में कुटीर उद्योग को हर घर में स्थान मिले, हर खाली हाथ को काम मिले।[3]

---

[1] IGNOU TS-2 (5), 2001, पर्यटन स्थल : उत्पाद संचालन–3, पृ. 29

[2] www.samode.org

[3] ग्राम प्रबन्धन विभाग, दे.सं.वि.वि. 2006ए आर्थिक स्वावलम्बन, पृ. 37

पर्यटन : किसी भी यात्रा का पर्यटन से संपर्क स्थापित हो जाता है। अगर वह निम्न शर्तें पूर्ण करती हो। यात्रा अस्थाई हो या ऐच्छिक हो, यात्रा का अर्थ किसी प्रकार का पारिश्रमिक अर्जित करना नहीं होना चाहिए।[4] दीक्षित व गुप्ता के अनुसार पर्यटन एक उद्योग है जो लोगों को उनके आगमन पर नियत स्थान की तरफ आकर्षित करने, उसे वहाँ तक पहुँचाने, आवासित करने, आहार प्रदान करने, मनोविनोद करने तथा उनकी वापसी पर उन्हें घरों तक पहुँचाने से संबंधित है।[5] विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनिया भर में प्रत्येक नौकरीपेशा लोगों में एक पर्यटन उद्योग रोजी–रोटी कमा रहा है। भारत के 1 करोड़ 65 लाख लोग पर्यटन से अप्रत्यक्ष लाभ पा रहे हैं।[6]

पहले भारत को सिर्फ प्राचीन संस्कृति का धरोहर वाला देश समझा जाता था। परंतु अब ऐसे पर्यटन स्थलों के प्रति उनकी रूचि अधिक बढ़ रही है, जहाँ वे अपना समय प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक नवीनता के बीच बिता सकें। हमारा देश पर्यावरणीय विविधताओं वाला देश है। वस्त्र उद्योग और हीरे तथा जवाहरात के बाद पर्यटन से सबसे अधिक विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। वर्ष 1951 में लगभग 17000 विदेशी पर्यटक भारत में आये थे लेकिन 2004–05 में इन पर्यटकों की संख्या 3367980 हो गई व इनसे होने वाली आय 21828 करोड़ रूपये के लगभग है।

पर्यटकों के लिए बाइबिल कही जाने वाली पत्रिका **Lonely Planet** के सर्वेक्षण में भारत को पर्यटन के मामले में 5 वाँ स्थान दिया है, तथा भारत और चीन क्रमशः 9.7 और 8.5 प्रतिशत विकास सहित 2012 दूसरे और तीसरे विशालतम् बाजार हो जायेंगे। विश्व का सबसे बड़ा उद्योग जिसे हम पर्यटन उद्योग के नाम से जानते हैं 21वीं सदी के सबसे तेज विकसित होते उद्योगों में से एक के रूप में उभरकर आया है। इसका अकेले का योगदान 9 प्रतिशत विश्व व्यापार में और 35 प्रतिशत वैश्विक व्यापार (सेवा क्षेत्र) में है। यह महाउद्योग आज विश्व के तीन दर्जन से अधिक राष्ट्रों के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करने का सबसे बड़ा स्त्रोत है।

ग्रामीण पर्यटन : पर्यटन का वह रूप जो कि ग्रामीण जीवन कला, संस्कृति और परम्पराएँ जो कि ग्रामीण परिवेश गाँवों से संबंधित हों तथा वह आर्थिक व सामाजिक लाभ के साथ–साथ पर्यटक और स्थानीय लोगों के मध्य पर्यटन को बढ़ावा देने के

---

[4] डॉ. संजय कुमार शर्मा, 1998, पर्यटन एवं पर्यटन उत्पाद, पृ. 12
[5] डॉ. के.के. दीक्षित एवं डॉ. जे.पी. गुप्ता, 2003, पर्यटन के विविध आयाम, पृ. 10
[6] Nov. Cronical, 2004, P-95

पारस्परिक अनुभवों को संवाद के रूप में स्थापित करे इसी को हम ग्रामीण पर्यटन के नाम से जानते हैं।

Rural Tourism का **Concept** यह है कि Rural Tourism का विकास अभी प्रारम्भिक अवस्था में है। **Lane B** के अनुसार ग्रामीण पर्यटन के निम्न आधार होते हैं – वह स्थान ग्रामीण क्षेत्र में स्थित हो; ग्रामीण कार्यपद्धति जैसे छोटे लघु उद्योग, खुला वातावरण, प्राकृतिक सान्निध्य, धरोहर, परम्पराएँ, सामाजिक गतिविधियाँ आदि होती हैं। वहाँ की प्रकृति–चरित्र परम्परागत पूर्ण हो; वह क्षेत्र विभिन्न प्रकार की मिश्रित अवस्था ग्रामीण परिवेश, इतिहास व अर्थव्यवस्था को प्रकट करता है।[7] **Further Negi JM** के अनुसार उस क्षेत्र में निम्न आकर्षण हों– ग्रामीण प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द, चिन्तामुक्त शांति व आकर्षित करने वाला खुला क्षेत्र हो। ग्रामीण खेल जैसे शिकार, मछली पकड़ना आदि होता है। जातिगत आकर्षण, लोकगीत, रीतिरिवाज, खान–पान व पर्व–त्योहारों की प्रमुखता हो। शैक्षिक व ऐतिहासिक आकर्षण किला, चर्च, मन्दिर, मस्जिद आदि स्थल हों।[8]

अब संपूर्ण विश्व में, विशेषकर पश्चिम में प्रकृति के पास वापस जाने और उससे राहत और सुख–शान्ति पाने की मनोवृत्ति है। आधुनिक जीवन, यान्त्रिक सभ्यता और स्वयं में सीमित रहने की मनोवृत्ति इस रूझान के मुख्य कारण हैं। अतः यह मनोवृत्ति ग्रामीण पर्यटन के बढ़ने की अच्छी आशंका है।[9] **Kamra & Chand** के अनुसार ग्रामीण पर्यटन स्थानीय समुदाय व कृषि को बढ़ाता व व्यवस्थित करता है तथा यह क्षेत्रीय संगठनों का विकास करता है।[10] सरकारी बजटों में पर्यटन के रूझान को देखते हुए राशि का प्रावधान बढ़ता जा रहा है।

पर्यटन के लिए बजट राशि का प्रावधान :

वर्ष	राशि (करोड़ रूपये में)
1991–92	83.19
1995–96	104.14
2001–02	150.00
2002–03	225.00
2004–05	500.00
2005–07	786.00

7 Lane B. 1994, What is Rural Tourism, Vol. 2, P. 7-12
8 Negi, J.M., 1990, Tourism Development and Nature Conservation, P. 128
9 Krishan K. Kamra & Mohinder Chand, 2004, Basics of Tourism, P. 131
10 मनोज दीक्षित एवं निशीथ राय, 2002 भारत के प्रमुख पर्यटन प्रभाव, पृ. 291

10 वीं पंचवर्षीय योजना में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए गाँवों में पर्यटन केतु अधिकाधिक 50 लाख रू. की राशि का प्रावधान किया गया है।[11]

ग्रामीण पर्यटन की पृष्ठभूमि : यह है कि शारपलै और शारपलै (1997) के अनुसार यह ग्रामीण पर्यटन 18वीं शताब्दी के अर्द्धशताब्दी के बाद यूरोप में एक जानी–पहचानी क्रिया–कलाप के रूप में उभर कर सामने आया। वन्यता, पहाड़ी में क्रियाएँ कर जैसे कनाडा का रॉकी पर्वत, स्विटजरलैण्ड का आल्पस पर्वत इत्यादी ने प्रारम्भ में तो उच्च वर्ग को बाद में मध्यम वर्ग के पर्यटक को आकर्षित किया । थॉमसकुक ने 1863 में स्विटजरलैण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों में इस प्रकार का पहला पर्यटन अभियान आरम्भ किया। उसके बाद से इस उद्योग में स्वास्थ्य तथा पहाड़ी खेलों के आधार पर इस प्रकार के पर्यटन में काफी वृद्धि हुई तथा 20वीं शताब्दी से ग्रामीण पर्यटन सभी देशों में बढ़ता चला गया।[12] भारत में केरल, हिमाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, उत्तराखण्ड, गुजरात, राजस्थान आदि राज्यों में ग्रामीण पर्यटन तीव्रता से बढ़ाया जा रहा है।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भी टिकाऊ ग्रामीण विकास के पक्षधर हैं। उनकी पुरा (Providing Urban Amenities in Rural Areas अर्थात ग्रामीण क्षेत्रों में नगरों जैसी सुख–सुविधाएँ प्रदान करना) की अवधारणा ऐसी ही है; जिसमें 20–30 गाँवों के समूह औसतन 1 लाख आबादी वाले 7000 ग्राम समूह बनाने की आवश्यकता है। ये समूह पुरा कहलायेंगे; अतः पुरा के विकास में ग्रामीण अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।[13]

Bulter & Clark G के अनुसार वैसे तो भारत में गाँवों की अर्थव्यवस्था कमजोर है लेकिन ग्रामीण पर्यटन, आय व रोजगार को बढ़ाकर अर्थव्यवस्था को बढ़ा सकता है व गाँवों की संस्कृति का संरक्षण भी कर सकता है।[14] वर्तमान समय में पूरे विश्व में चल रही 'ग्लोबल विलेज' की परिकल्पना भारत में ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने का माध्यम हो सकता है। ताज रावत के अनुसार ग्लोबल विलेज की परिकल्पना एक ऐसे पर्यावरण एवं पर्यटन गाँव के रूप में की गई है जिसमें हर हाथ को काम मिले और हर खेत को पानी, घर–घर में रोशनी हो व हर ग्रामीण के चेहरे पर मुस्कान लौट आये यह

---

[11] प्रतियोगिता दर्पण, नवंबर 2005, पृ. 700–702

[12] R.K. Pruthi, 2006, Rural Tourism, P. 68

[13] वीरेश्वर उपाध्याय, 1जनवरी 2007, प्रज्ञाअभियान, पृ. 2

[14] Bulter R. and Clark G. 1992, Contemprory Rural Systems in Transition, Vol.2. Pg. 175

ऐसी बहुउद्देशीय योजना है जिसमें ग्रामीण आत्मा नष्ट नहीं होती एवं पर्यटकों को वास्तविक सुख व शांति प्राप्त हो जाती है।[15]

भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए पर्यटन व संस्कृति मंत्री कु० अम्बिका सोनी ने पर्यटन मंत्रालय के अंतर्गत दो परियोजनाएँ बनाई जिसमें पहला **10th Plan GOI-UNDP Endogenous Project (Software Component)** हैं। इसमें देश के 31 गाँवों का चयन किया गया है व राजस्थान के सामोद, नीमराणा, हल्दीघाटी ये तीन गाँव चुने गए हैं। इस योजना में 20–20 लाख रूपये प्रत्येक गाँव को दिये गए हैं। इस परियोजना का उद्देश्य गाँवों का जीवन, संस्कृति, कला, धरोहरों व मूलभूत सुविधाओं का विकास करना है।[16] दूसरी परियोजना **10th Plan Under Rural Tourism Scheme (Hardware Component)** है। इसमें देश के 23 राज्यों के 77 गाँव चुने गए हैं जिनमें हर गाँव को 50–50 लाख रूपये मंजूर किये जा रहे हैं व राजस्थान के सामोद व नीमराणा गाँव इस योजना में शामिल हैं।[17]

राजस्थान राज्य में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु यहाँ दीनदयाल उपाध्याय आदर्श पर्यटन गाँव योजना शुरू की गई। योजना के अंतर्गत प्रथम चरण में चयनित सामोद (जयपुर), चावण्ड (उदयपुर), छीजल–ओसिया (जोधपुर), मोलेला (कोटा), खुडी (जैसलमेर), ताल छापर (चुरू) आदि गाँव हैं जिन्हें पर्यटन की दृष्टि से सक्षम बनाया जाएगा।

केन्द्रीय योजना आयोग के निर्देशानुसार राजस्थान सरकार 'हर ग्रामीण हाथ को काम' के उद्देश्य से 10वीं पंचवर्षीय योजना में को पूरी तरह से गाँव आधारित रखने का प्रयास कर रही है।[18] राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने का मुख्य उद्देश्य बड़े शहरों के बढ़ते दबाव को कम करने के साथ–साथ राज्य के ग्रामीण अंचलों में उपलब्ध प्राकृतिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण व संवर्धन पर बल देना है। आगामी वर्षों में राजस्थान भी **'Heritage Village'** का राज्य नजर आयेगा।

---

[15] ताज रावत, 2002, पर्यटन विकास के विविध आयाम, पृ. 19–25
[16] www.exploreruralindia.org
[17] www.incredibleindia.org
[18] प्रतियोगिता दर्पण, दिसंबर 2003, पृ. 897

<u>महत्व</u> **<u>(Justification)</u>** आधुनिक समय में शहरी वातावरण की जनता अस्त–व्यस्त व भौतिक जीवनशैली से ऊबकर तनाव दूर करने, मानसिक शांति पाने के लिए प्रकृतिमय गाँवों की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

- ग्रामीण पर्यटन के विकसित होने से गाँव भी विकसित होंगे व ग्रामीण धरोहरों का जीर्णोद्धार भी होगा।
- राजस्थान के कई गाँव अपार सांस्कृतिक वैभव व समृद्ध विरासत के बावजूद वहाँ ग्रामीण पर्यटन कम है। ग्रामीण पर्यटन का सुनियोजित स्वरूप सामने आने पर वहाँ ग्रामीण पर्यटन बढ़ेगा।
- ग्रामीण पर्यटन वह विधि है जो भारत में Mass Tourism (जनसंख्या के बहुत बड़े हिस्से का पर्यटन से जुड़ जाना।) को बढ़ावा देगा।
- ग्रामीण पर्यटन लोगों द्वारा शहरी क्षेत्रों की ओर बढ़ रहे प्रवासन को रोकेगा।
- **WTO** के अनुसार आकलन किया गया है कि ग्रामीण पर्यटन में 3% अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक (लगभग 19 मिलियन) ग्रामीण पर्यटन के उद्देश्य से यात्रा करता है व ग्रामीण पर्यटन प्रतिवर्ष 6% की दर से विकसित हो रहा है व अन्य पर्यटन प्रतिवर्ष 2% की दर से विकसित हो रहे हैं।
- ग्रामीण पर्यटन के कारण गाँवों में आधारभूत सुविधाओं का विकास व बिजली, सड़क, संचार की व्यवस्था का विकास होगा।
- ग्रामीण विकास की महत्ता को देखकर 2007–08 के बजट में गाँवों के विकास के लिए 2752286 करोड़ रूपये भारत सरकार द्वारा आवंटित किये गए हैं।[19]

इस शोध के द्वारा सामोद में चल रहे ग्रामीण पर्यटन द्वारा स्थानीय लोगों की संस्कृति, समाज, अर्थव्यवस्था व पर्यावरण पर पड़ रहे सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करके ग्रामीण पर्यटन का सुनियोजित स्वरूप प्रकाश में लाया जाएगा। जिससे इस पर्यटन के माध्यम से वातावरण पर सांस्कृतिक प्रदूषण से होने वाली गाँव की समस्याओं को रोका जा सके व इस पर्यटन से सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण व संस्कृति का व्यावसायीकरण रूकेगा, साथ में गाँवों की अर्थव्यवस्था भी सुदृढ़ होगी।

---

[19] दैनिक जागरण, 7 मार्च 2007, पृ. 4

शोध अभिकल्प (Research Design)

समस्या का चयन (Selection of Problem)

- साहित्यिक सर्वेक्षण, पायलट स्टडी एवं समस्या के वर्तमान महत्व के आधार पर शोधार्थी के सामने यह तथ्य आया है कि ग्रामीण पर्यटन का अभी तक सुनियोजित स्वरूप उभरकर सामने नहीं आया है।
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था वाले देश भारत में ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनाएँ है तथा विदेशी पर्यटक ग्रामीण पर्यटन की ओर तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। इसलिए इस विषय पर शोध करना आवश्यक है जिससे ग्रामीण पर्यटन के पूर्ण रूप को समझा जा सके।
- समय की आवश्यकता के अनुरूप यह अत्यंत महत्वपूर्ण शोध कार्य है अतएव विषय सर्वथा उचित व मौलिक है।

समस्या का कथन (Statement of Problem)

ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएँ व प्रभाव – "सामोद (जयपुर) के विशेष संदर्भ में"

उद्देश्य (Objectives)

1. ग्रामीण पर्यटन के स्वरूप व विकास का अध्ययन करना।
2. समोद में ग्रामीण पर्यटन की समीक्षा करना।
3. ग्रामीण पर्यटन की नीतियों व योजनाओं का विवेचन।
4. ग्रामीण पर्यटन से होने वाले प्रभावों का अध्ययन।
5. ग्रामीण अंचलों में उपलब्ध प्राकृतिक, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण व संवर्धन पर बल देना।
6. ग्रामीण पर्यटन की चुनौतियों व संभावनाओं का अध्ययन।

परिकल्पना (Hypothesis)

क) ग्रामीण पर्यटन का संस्कृति, समाज, अर्थव्यवस्था, पर्यावरण पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

शोध प्रणाली (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध अध्ययन को निम्न चरणों में पूर्ण किया जाएगा। ऐतिहासिक तथा सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य की जानकारी, मूल ग्रंथ, सहायक ग्रंथ, लेखों आदिसाहित्य, वेबसाइट, जर्नल, प्रोजेक्ट रिर्पोट, सरकारी तथा गैर सरकारी वार्षिक रिर्पोट आदि स्त्रोतों से शोध साहित्य सामग्री का संचयन करना।

- पर्यटक की गुणात्मक व मात्रात्मक माँग व ग्रामीण पर्यटन के संदर्भ के साथ सेवाओं की आपूर्ति किसी विशेष प्रकार के डिजाइन किये हुए प्रश्नावली के द्वारा की जायेगी।
- पर्यटकों, स्थानीय निवासियों, पर्यटन संस्थानों (Travel Agency) और ग्रामीण पर्यटन केन्द्र से मिली प्रतिक्रियाओं के आधार पर प्रश्नावली तैयार की जायेगी।
- संभाव्यता तथा प्रभावकारी परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए प्रतिचयन विधि, सांख्यिकी विश्लेषण द्वारा व्याख्या तैयार की जायेगी।
- प्रश्नावली को प्रतिउत्तर प्राप्ति के आधार पर स्थानांतरित किया तथा सुधारा जायेगा। साधारणतया अनुक्रियाएँ प्राप्त करने के लिए Close & Open प्रश्नों के साथ Five Point Scale का प्रयोग किया जायेगा।
- तथ्यों का विश्लेषण व विवेचन के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त करना व अपने सुझाव देकर शोध कार्य को पूर्ण करना।

प्रयुक्त चर

IV : ग्रामीण पर्यटन

DV : A.) संस्कृति

B.) अर्थव्यवस्था

C.) समाज

D.) पर्यावरण

IV : ग्रामीण पर्यटन का वर्णन पूर्व में किया गया है।

DV : संस्कृति– संस्कृति किसी भी समाज की आत्मा है यह मनुष्य के सामाजिक जीवन का प्राण है। संस्कृति से उन संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे मनुष्य अपने वैयक्तिक व सामाजिक जीवन के आदर्शों का निर्माण करता है। इसके अंतर्गत मानव जीवन के विविध क्रियाकलाप, आचार–विचार, आहार–विहार आदि आते हैं। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार मनुष्य को सुसंस्कृत बनाने का विज्ञान व विधान संस्कृति है।[20] पं. जवाहर लाल नेहरू के अनुसार संस्कृति मनुष्य का भीतरी विकास और नैतिक उन्नति है व एक–दूसरे के साथ सद्व्यवहार तथा दूसरों को समझने की शक्ति है।[21] संस्कृति मानवीय वृतियों, मनुष्य के रहन–सहन, आचार–विचार, शिष्टाचार, परम्परागत संस्कारों, जीवन–पद्धति का समेकित प्रतीक है।[22]

अर्थव्यवस्था : अर्थव्यवस्था समाज की उपप्रणाली है जिससे समाज का ढांचा क्रियांवित व अपने पथ पर अग्रसर होता है।[23] अर्थव्यवस्था व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र के विकास की अमूल्य निधि है। अर्थव्यवस्था वर्तमान युग की अनिवार्य आवश्यकता है। P. Larner के अनुसार आर्थिक क्रिया का अर्थ इच्छाओं की पूर्ति के लिए सामान तथा सेवाएँ जुटाना है। इस क्रिया में विनिमय और यातायात द्वारा सामान वहाँ पहुँचाया जाता है जहाँ उसकी आवश्यकता होती है।[24] अतः अर्थव्यवस्था के बिना विकास की परिकल्पना सार्थक नहीं हो सकती है यह समाज का मेरूदण्ड है।

समाज : समाज का प्रयोग मनुष्यों के समूह के अर्थ में किया जाता है। समाज मुख्यतः समूह , संगठन , समुदाय या समष्टि के अर्थ में किया जाता है। मैकाइवर के अनुसार– मनुष्यों में जो चलन है, जो कार्य विधियाँ है, पारस्परिक सहायता की जो प्रकृति है, शासन की जो भावना है, मानव व्यवहार के सम्बन्ध मैं जो स्वतत्रंताऐं व मर्यादाएँ है, उनकी व्यवस्था को समाज कहते हैं। इस विस्तार परिवर्तित होती हुई जटिल व्यवस्था को ही समाज कहा जाता है।[25]

पर्यावरण : मनुष्य जिस समाज परिवेश में जीता है वही उसका पर्यावरण है हवा, पानी , मिट्टी व पेड़ पौधों से लेकर छोटे से छोटे प्राणी मात्र और मानव सब के लिए इसमें

---

[20] पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, 1942, तीर्थस्थापना का प्रयोजन व स्वरूप, अंक 5, पृ. 5

[21] पं. जवाहरलाल नेहरू, 1991, विश्व इतिहास की झलक, खण्ड 1 व 2

[22] डॉ हरिमोहन, 2003, संस्कृति पर्यावरण, पर्यटन, पृ. 16

[23] हेरी एम. जानसन, 1999, समाजशास्त्र एक विधिवत विवेचन, पृ. 199

[24] A.P. Larner, 1949, The Myth of the Parasitic Middleman Commentery, Vol. 8, Pg. 45-51

25. सत्यकेतु विद्यालंकार, 1994, समाज शास्त्र, पृष्ठ – 38

स्थान है। अतः इन सबका परस्पर संबंध ही पर्यावरण है। पर्यावरण का अर्थ परि + आवरण यानि चारों ओर से घिरा हुआ आवरण। बोरिंग के अनुसार – एक व्यक्ति के पर्यावरण में वह सब कुछ सम्मिलित किया जाता है जो उसके जन्म से मृत्यु पर्यन्त तक प्रभावित करता है।[26]

प्रतिचयन विधि : इस शोध कार्य के लिए सामोद गाँव (जयपुर) के स्थानीय लोगों, देशी विदेशी पर्यटकों एवं विभिन्न पर्यटन संस्थाओं को चुना जायेगा। इस क्षेत्र से आकस्मिक विधि द्वारा 300 प्रतिदर्श का चुनाव किया जायेगा।

उपकरण(Tools): शोध में उपकरण के रूप में स्वयं निर्मित प्रश्नावली (Questionnaire) का प्रयोग किया जायेगा।

सांख्यिकीय विश्लेषण :

परिकल्पनाओं की जांच हेतु उपयुक्त सांख्यिकी विश्लेषण का प्रयोग किया जायेगा।

साहित्यिक सर्वेक्षण (Litrature Review)

1. Nuchnard Rattanasuwongchai (1998) ने थाइलैण्ड के ग्रामीण समुदाय पर ग्रामीण पर्यटन से पड़ने वाले सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों को अपने अध्ययन में पाया व निष्कर्ष निकाला कि पर्यटन में अच्छी नीतियाँ दृढ़ तब होगी जब क्षेत्र व नीतियों का सही मुल्यांकन, वहन क्षमता व मूलभूत सुविधाओं के सही आधार को प्राथमिकता दें। स्थानीय लोग पर्यटन से जुड़े व स्थानीय लोग और पर्यटक इस शिक्षा से शिक्षित हों।
2. Bulter R. and Clark G (1992) के अध्ययन में बताया गया है कि भारत में गाँवों की अर्थव्यवस्था पहिले ही कमजोर है। लेकिन ग्रामीण पर्यटन आय व रोजगार को बढ़ाकर गाँव के अर्थतंत्र को मजबूत करेगा साथ ही संस्कृति व वातावरण को संरक्षित करेगा।

---

26 आर ए शर्मा "पर्यावरण शिक्षा" पृ0 04, 2001।

3- Dennis M. Brown (1990) ने अपने अध्ययन में ग्रामीण पर्यटन की योजनाओं व विकास को बताकर पर्यटन के आर्थिक व अन्य प्रभावों को देखा तथा पाया कि ग्रामीण पर्यटन अपने साथ Heritage, Nature Based tourism, Eco and Agri Tourism को बढ़ावा देता है व पर्यटन का Sustainable Development भी करता है।

4- Amaiya Kumar Pattnaik ने अपने शोध पत्र में पर्यटन के सामाजिक–आर्थिक प्रभावों का अध्ययन किया है व बताया है कि ये दोनों ही प्रभाव पर्यटन के सहीं रूप को उभारने, आय को बढ़ाने व पर्यटन विकास में अपनी महती भूमिका निभाते हैं। उन्होने निष्कर्ष में बताया कि पर्यटन का विकास इस प्रकार से हो कि उस स्थान के समग्र सामाजिक, सांस्कृतिक उद्देश्यों व मूलभूत सुविधाओं को लाभ पहुँचे।

5. Mr. N.K. Piplani (2001) ने अपने अध्ययन में भारत की ग्रामीण पर्यटन की बाजार नीति को बताया है व कहा है कि भारत में ग्रामीण पर्यटन की अपार क्षमताएँ भरी पड़ी हैं। इससे गाँवों के पुराने किले, भवनों, धरोहरों का संरक्षण होगा। ग्रामीण संस्कृति का विदेशों में प्रसार होगा तथा ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए भिन्न–भिन्न कारकों का विवेचन इस शोध पत्र में है।

6. डॉ. एल.आर. भल्ला (1990) ने अपनी पुस्तक में राजस्थान की कला, संस्कृति, समाज आदि का विवेचन किया है। इस साहित्यिक सामग्री से राजस्थान के इतिहास, कला, संस्कृति, पर्यटन के अध्ययन को इस शोध में प्रयोग किया गया है।

7. R.K. Pruthis (2000) ने अपने शोध अध्ययन में ग्रामीण पर्यटन के नवीन आयामों व चुनौतियों पर प्रकाश डाला है। निष्कर्ष में बताया गया है कि वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में ग्रामीण पर्यटन रामबाण औषधि का कार्य करेगा व जिन ग्रामीण स्थानीय समुदायों का भविष्य अनिर्णित है उनके लिए यह आशा की किरण है।

8- Ganon A : Healy (1994) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि ग्रामीण पर्यटन का संस्कृति व अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। साथ ही पर्यटन से जो आर्थिक ढांचा मजबूत हो रहा है उससे संस्कृति का व्यावसायीकरण न हो इसके लिए एक सुनियोजित स्वरूप बनाना आवश्यक है।

9. Kishore Singh (1999) ने अपने अध्ययन में राजस्थान के ग्रामीण पर्यटन की समीक्षा की है व बताया है कि ग्रामीण लोग कृषि के साथ पर्यटन से जुड़ें, ग्रामीण अंचलों में उपलब्ध ऐतिहासिक धरोहरें, किले आज Heritage Hotel बन रहे हैं जिससे विदेशी पर्यटक गाँव में बढ़ा है। इस शोध में ग्रामीण पर्यटन के क्रियाकलाप व क्षेत्र भी प्रदर्शित हैं।

10. Prof. Kapil Kumar ने अपनी पुस्तक में पर्यटन के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय आदि प्रभावों का विवेचन किया है। निष्कर्ष में बताया कि प्रभाव तो पर्यटन पर अच्छे और बुरे दोनों पड़ते हैं लेकिन बुरे प्रभावों को रोकें व नीति बनाकर सरकार व जनता के सहयोग से भारत में पर्यटन को बढ़ाया जा सकता है।

शोध की सीमाएँ (Limitations of the Study) :

- भारत में ग्रामीण पर्यटन हेतु 31 गाँवों को पर्यटन मंत्रालय द्वारा UNDP Project में पर्यटन के विकास के लिए अपनाया गया है।
- यह पर्यटन का एक नया आयाम है तथा इससे संबंधित शोध कार्य अधिक उपलब्ध नहीं है। इस कारण शोधकर्ता को जानकारी लेने हेतु ग्राम पंचायत, सरकारी संस्थाओं व विशेषज्ञों से विभिन्न माध्यमों द्वारा आंकड़े संग्रहित करने पड़ेंगे।
- इस अध्ययन के व्यापक ढाँचे के परिप्रेक्ष्य में समय, धन एवं मानव श्रम मुख्य नियंत्रक कारक होंगें।
- इस शोध अध्ययन का Case Study Area सामोद गाँव तक ही सीमित रहेगा।

कार्य योजना :

1. परिचय

2. शोध योजना

- शोध की समस्या
- शोध समस्या का औचित्य
- शोध अध्ययन का उद्देश्य
- परिकल्पना
- शोध प्रणाली
- साहित्यिक सर्वेक्षण
- शोध की सीमाएँ

3. ग्रामीण पर्यटन का संप्रत्यय, दर्शन एवं उपजे अन्य पर्यटन।

4. सामोद में ग्रामीण पर्यटन की समीक्षा।

5. ग्रामीण पर्यटन क्षेत्रों, नीतियों व योजनाओं का विवेचन।

6. ग्रामीण पर्यटन का प्रभाव–संस्कृति, समाज, अर्थव्यवस्था, पर्यावरण।

7. ग्रामीण पर्यटन की चुनौतियाँ व संभावनाएँ।

8. आंकडों का विश्लेषण व विवेचन।

9. निष्कर्ष व सुझाव

संदर्भ और साहित्य ग्रंथ सूची

संदर्भ सूची :

1. Bulter R. Clark G. (1992) Tourism in Rural Areas: Canada and U.k, Contemporary Rural Systems in transition. Economy and Society Wallingford, Vol. 2 P. 175.
2. Dennis M. Brown (1990) Rural information center- Rural Tourism : An Annotated Bibliography ; Economic Research Service U.S. Dept. of Agriculture, Washington.
3. Gannon A. (1990) Rural tourism as a factor in rural community Economic development for Economies in transition, Journal of Sustainable Tourism, 1 (1&2) p. 51-60
4. Healy R. (1994) The common Pool Problem in Tourism landscapes, Annals of Tourism Research, 21 (3) P. 596-611
5. Kamra Krishan K. Chand Mohinder (2004) Basics of Tourism, Kanishka Publishers, New Delhi, P. 131
6. Kumar Pro. Kapil (2001) Tourism Impacts, MTM-10, IGNOU text book, New Delhi.
7. Lane, B. (1994), What is Rural Tourism, Journal of Sustainable Tourism, Vol. 2, P. 7-12
8. Lerner, A.P. (1949) The Myth of the Parasitic Middleman, Commentary, Vol. 8, P. 45-51
9. Negi J.M. (1990) Tourism Development and Nature Conservation, Metropolitan Publisher, New Delhi, P-128
10. Nuchard Rattanasuwngchai (1998) The Impact on Rural Communities II Thailand, Dept. of Carrier Sciences Kesetsart University Bankok, Thailand, P 10.01
11. Pattnaik Amiya Kumar, Tourism Journal The Green Portal, Kerela Institute of Tourism and Travel Studies, P 90-96

12.Piplani Mr. N.K. (2001) Strategies for Marketing Rural Tourism in India, Rural Tourism Conference 7-8 Dec. Udaipur (Rajsthan)

13.Pruthi R.K. (2006) Rural Tourism Challenges and Paradox, Rajat Publications, New Delhi, P. 68

14.Singh Kishor (1999) Rajasthan ALA CARTE RTDC Jaipur, P. 91-102

15.भल्ला डॉ. एल.आर. (2004) सामयिक राजस्थान, राजस्थानी समाज, कला एवं संस्कृति, कुलदीप पब्लिकेशन्स, जयपुर

16.दीक्षित डॉ. के.के. गुप्ता, डॉ जे.पी. (2003) पर्यटन के विविध आयाम, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 10

17.दीक्षित मनोज एवं राय निशीथ (2002) भारत के प्रमुख पर्यटन उत्पाद, न्यू रायल बुक कम्पनी, लखनऊ, पृ. 291

18.ग्राम प्रबंधन विभाग / रचनात्मक प्रकोष्ठ (2006) आर्थिक स्वावलम्बन भाग 1, वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शान्तिकुन्ज, हरिद्वार, पृ. 37

19.हरिमोहन (2003) संस्कृति, पर्यावरण व पर्यटन, श्री टी.एस. बिष्ट, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 16

20.हेरी. एम. जानसन (1999) समाजशास्त्र एक विधिवत विवेचन, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्लीए पृ. 199

21.इग्नू (2001) पर्यटन स्थल : उत्पाद संचालन–3, TS-2, (5) पृ. 29

22.नेहरू पं. जवाहर लाल (1991) विश्व इतिहास की झलक, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, खण्ड 1,2

23.रावत ताज (2002) पर्यटन विकास के विविध आयाम, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 18–21

24.शर्मा डॉ संजय, (1998) पर्यटन एवं पर्यटन उत्पाद, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 12

25. शर्मा, आर.ए. (2001) पर्यावरण शिक्षा, सूर्या पब्लिकेशन्स, मेरठ पृ. 04।

26.विद्यालंकार, सत्यकेतु (1994) समाज शास्त्र, श्रीसरस्वती सदन, नई दिल्ली, पृ. 39

पत्र–पत्रिकाएँ

1. अखण्ड ज्योति
2. क्रानिकल
3. दैनिक जागरण

4- प्रज्ञा अभियान पाक्षिक

5. प्रतियोगिता दर्पण

वेब साइट

1. www. Samode.org
2. www.cxploreruralindia.org
3. www.incredibleindia.org